अध्याय इकतालीसवाँ

॥श्री गणेशाय नमः॥ श्री सरस्वत्यै नमः॥ श्री सिद्धारूढ़ाय नमः॥

"हे सिद्धारूढ़ सतगुरुनाथजी, आप ही हमारे माँ बाप हो तथा आप का नाम लेते ही आप सभी पापों का विनाश करते हैं। इस बात का हमें हमेशा स्मरण रहें। मेरा यह शरीर आप के दिव्य चरणों के समीप रखिए।"

श्री सिद्धारूढ़ स्वामीजी साक्षात भगवान होकर वे सभी प्राणियों पर कृपा करते हैं। उनका नाम लेते ही वे स्वयं प्रकट होते हैं। इस कलियुग में नामस्मरण के अलावा अन्य सभी उपासनाएँ पूर्णत: व्यर्थ हैं; उनमें से कुछ उपासनाएँ तो घातक भी हैं। योग साधना करनी हो तो गुरुजी के बिना ऐसी साधना संभव नहीं है; इसलिए गुरुजी की खोज करने जाओ तो उनसे भेंट होना दुर्लभ होता है। अगर स्वयं ही योग साधना करने का प्रयास करो, तो अगर कुछ गलती हो जाए तो मनुष्य भ्रमित हो जाता है; किसी तरह से योग साधना पूरी भी हो जाए तो भी सारभूत विचार के पश्चात जो ब्रह्मज्ञान प्राप्त होता है, वह भी प्राप्त नहीं होता। वेदांत का गहन अर्थ सतगुरुजी के बिना समझ में नहीं आता, सतगुरुजी की सेवा करने के पश्चात श्रुतियों (वेदों) का अर्थ समझ में आता है। परंतु, घरगृहस्थी में व्यस्त सभी से यह संभव नहीं होता, इसीलिए, ऐसे लोगों के लिए नामस्मरण के अलावा अन्य उपाय नहीं है। नामस्मरण करने से मनुष्य भव सागर के पार हो जाता है और उस (नामस्मरण) की विस्मृति से भव बंधन में बंध जाता है, नामस्मरण जैसा सुख नहीं और उसके अतिरिक्त जो कुछ है वह सब दुखदायक ही है। इस प्रकार, नामस्मरण करने वाले भक्त काल से भी भयभीत नहीं होते; सतगुरुजी की आज्ञा से जो नाम (ईश्वर का) हम जपते हैं, वह हमें निश्चित ही फल देता है, इसीलिए सतगुरुजी की शरण में जाना चाहिए। उनसे एकबार नाम लेना (यानी दीक्षा या उपदेश लेना) चाहिए और वही नाम अपने घर में रहकर भी निष्ठा पूर्वक जपने से सतगुरुजी हम से प्रसन्न हो जाते हैं। नाम धारक (नामस्मरण करने वाला) के हृदय में सतगुरुजी रहते हैं और उसका हाथ पकड़कर उसे ब्रह्म तक पहुँचाते हैं। अस्तु। अब कहानी की ओर ध्यान दीजिए।

विरुपाक्ष नाम का एक भक्त था, उसकी सद्‌गुणयुक्त माता हिरुबाई वृद्ध हो गयी थी। प्रतिदिन वह प्रेम पूर्वक सतगुरुजी का नामस्मरण करती थी तथा एक दिन भी टाले बगैर वह श्रद्धा से पुराण कथा पर प्रवचन सुनने जाती थी। एकबार पुराण कथा सुनने के लिए घर से निकलते समय पत्थर से ठेंस लगकर वह जोर से गिर पड़ी और "सतगुरुनाथजी" कहकर उठने लगी परंतु, किसी भी प्रकार वह उठकर बैठ न पायी। आखिर घर के सदस्य उसे उठाकर घर में ले आए; उसके पाँव की हड्डी टूटने के कारण चलना उसके लिए असंभव ही हो गया था। उसपर सिद्धारूढ़जी को विरुपाक्ष के घर बुलाया गया, उनकी पाद्‌यपूजा करके उन्हें संतुष्ट किया गया, उसपर उस वृद्धा ने उन्हें पूछा, "महाराज, जब मैं पुण्य कर्म करने चली थी तो इस दुख का सामना मुझे क्यों करना पड़ रहा है?" तब महाराजजी ने कहा, "माताजी, आप की आयु खतम ही हुई थी, परंतु आप पुराण कथा सुनने के लिए निकल पड़ी थी इसलिए सतगुरुजी ने आप की रक्षा की।" ऐसा कहकर सतगुरुजी सिद्धाश्रम लौटे। उन दिनों में लेटे लेटे हिरुबाई हमेशा नामस्मरण तथा सतगुरुजी का चिंतन करने में समय बिता रही थी। पाँव टूटकर घर लेटे रहना पड़ रहा था, इसलिए हिरुबाई ने प्रतिदिन न टाले बगैर विरुपाक्ष को पुराण कथा ध्यान से सुनकर वापस घर लौटने के पश्चात पुराण कथा में बयान की गयी कहानी उसे सविस्तार बताने ने के लिए कहा। एक दिन विरुपाक्ष ने उसे मार्कंडेय ऋषि की कहानी बयान की; मार्कंडेय ने मृत्यु के समय भगवान श्रीशिवजी का अत्यंत तड़प के साथ ध्यान तथा नामस्मरण करने के कारण साक्षात श्रीशिवजी ने प्रकट होकर यमराज को वहाँ से निकाल दिया। यह कथा सुनकर हिरुबाई ने कहा, "हमारे भगवान साक्षात सिद्धारूढ़जी हैं। मृत्यु के समय सिद्धनाथजी का मैं स्मरण करुँ तो वे अवश्य आकर मेरी रक्षा करेंगे।"

एक पल भर भी वह सतगुरुजी का नामस्मरण करना भूलती नहीं थी तथा मन ही मन हमेशा उन्हीं का चिंतन करती थी। एक दिन दोपहर भोजन करने के पश्चात उसे लगा की उसे चक्कर आ रहा है। उस समय हिरुबाई ने देखा तो, जिन के मुख में लपलपाती हुई जीभाएँ हैं ऐसे दो कालेकलूटे उग्र पुरुष उसके सामने खड़े हुए उसे दिखाई पड़े। जलते हुए अंगारों के समान भड़कीली लाल आँखों से तरेरते हुए उन्होंने हिरुबाई को जोर जोर से हाँक देना शुरु किया;

उन भयंकर पुरुषों को देखकर भयभीत हुई हिरुबाई ने गुरु स्वरूप का स्मरण किया और दीनता से उनसे प्रार्थना की। उसने कहा, "हे सतगुरु सिद्धारूढ़जी, आप मेरे समर्थक बनकर आईए। तेजी से दौड़ते हुए आकर इन यमदूतों से मेरी रक्षा कीजिए। इस शरीर पर मेरी कतई आसक्ति नहीं रही। परंतु पुराण कथा सुनने की मुझे लगन लगी है। शरीर की पीड़ा ने आयु का विनाश करने के कारण मैं गुरुजी के मुख से बोध नहीं सुन पायी। सतगुरुजी के मुख से बोध सुनने के पश्चात मैं चैन से यमपुरी जाऊँगी।" ऐसी उसने गिड़गिड़ाकर प्रार्थना की, इतने में सिद्धसतगुरुजी प्रकट हुए और हिरुबाई के समीप आकर खड़े हुए। उससे उसका ढाढस बँधा, उसी क्षण वह यमदूतों से बोली, "मैं अब इस समय आप के साथ नहीं आ सकती, आप निकल जाईए। मेरी यह पीड़ा खतम होने के पश्चात सिद्धारूढ़जी के मठ जाकर उनका आशिर्वाद तथा दीक्षा लेकर उनकी आज्ञा से मैं आऊँगी। तब तक किसी हालत में भी मैं यमपुरी नहीं आऊँगी।" यह सुनकर यमदूतों ने कहा, "पकड़ लीजिए उसे!" और दौड़ते हुए वे उसके समीप आए| यमदूत आगे बढ़कर उनके हाथ के फँदे उसके गले में डालने की कोशिश करते ही वे फँदे सिद्धनाथजी के हाथ आए और तत्काल टूट गए; इस प्रकार बार बार उनकी कोशिशें व्यर्थ हो गयी। उसपर हाथ में लाठी लेकर सतगुरु महाराजजी यमदूतों के पास गए। उन्हें अपनी ही ओर लाठी लेकर आते हुए देखकर भयभीत हुए यमदूत जोर जोर से गर्जना करते हुए वहाँ से भाग निकले। यमदूत यमपुरी गए और उन्होंने यमराज से कहा, "स्वामी, हालाँकि, आप का कार्य करने हेतु हम मृत्युलोक पहुँचे, परंतु एक यतिवर्य आड़े आने के कारण वह कार्य पूरा किए बगैर ही हम वापस लौटे।" यमराज सर्वज्ञ होने के कारण, उसने कहा, "अरे पागलों, आप लोगों ने सिद्धारूढ़जी को नहीं पहचाना? इस जगत में फिलहाल वही ईश्वर का अवतार हैं। आप उनके भक्तों को यमपुरी ले आना चाहते हैं, परंतु उनके भक्तों पर आप की सत्ता चल ही नहीं सकती; क्योंकि सिद्धनाथजी पूरे जगत को नियंत्रित करते हैं, इतना ही नहीं, वही कर्ता तथा हर्ता भी हैं।"

इधर हिरुबाई ने कहा, "हे दयालु सिद्धारूढ़जी, आप ने मुझे यमदूतों से छुड़ाया हैं, अब मेरे पाँव में ताकत आने दीजिए।" उसपर सतगुरुजी ने कहा, "मैं तुम्हे और

छह महीने की आयु दे रहा हूँ; तुम उसे लेकर इस मनुष्य जन्म का सार्थक कर लो। शांत चित्त से भजन करो और फिर मेरे लोक आ जाओ।" ऐसा कहकर सतगुरुजी ने उसके पाँव को हाथ से स्पर्श करते ही उसके पाँव में शक्ति आ गई और वह तत्काल उठकर खड़ी हो गई। उसपर उसने सतगुरुजी के चरण छुए, इतने में वे अंतर्धान हो गए। उसके पास उसका पुत्र विरुपाक्ष था परंतु वहाँ जो कुछ घटित हुआ, उसके प्रति उसे कुछ भी पता नहीं चला। विरुपाक्ष ने माताजी से पूछा, "माताजी, अचानक आप के पाँव में शक्ति कैसे आई?" उसने उसे सारा वृत्तांत बयान किया और कहा, "मेरे पुत्र! सतगुरुजी ने मेरी रक्षा की। उन्होंने मेरी आयु छह महीनें बढ़ाई है। उसी प्रकार, पुराण कथा सुनने के लिए मुझे शक्ति दे दी है। परंतु उसके पश्चात वे मुझे अपने लोक (स्थान) ले जाने वाले हैं।" हिरुबाई की बात सुनकर विरुपाक्ष आनंदित हो गया और अपनी माताजी को मठ ले जाकर उसने उसकी सतगुरुचरणों से भेंट करायी। हिरुबाई ने सतगुरुजी को सारा वृत्तांत बयान किया और कहा, "हे गुरुनाथजी, आप साक्षात ईश्वरी अवतार होकर, भक्तों के लिए ही आप ने अवतार धारण किया है, आप भक्तों की काल से रक्षा करते हैं। पूर्वकाल में मार्कंडेय ऋषि ने जब आप का ध्यान तथा नामस्मरण किया, तब आप ने उसकी यमराज से रक्षा की, उसी प्रकार आप ने मेरी भी यमदूतों से रक्षा की।"

उसपर सिद्धारूढ़जी ने उसे कहा, "तुम्हारे शुद्ध भाव से सतगुरुजी प्रसन्न हुए हैं। जो भक्त सतगुरुजी का हमेशा ध्यान करते हैं, वे यम के दंड़ से मुक्त होते हैं। इसलिए, तुम सतगुरुजी नामस्मरण कभी भी मत छोड़ो। उसका अविरत जाप करने से सारे भ्रम दूर होते हैं; जिससे जीवात्मा को यथायोग्य विश्राम की प्राप्ति होकर वह सतगुरुजी के स्थान पहुँचता है।" ऐसा सतगुरुजी का उपदेश सुनकर हिरुबाई का मन आनंद सागर में डूब गया, उसके पश्चात एक पल भर के लिए समाधि सुख की अनुभूति लेकर उसने सतगुरुजी के चरण छू लिए तथा उनके उपदेश का चिंतन करती हुई वह पुत्र के साथ घर लौटी। भक्तिभाव से वह दिनरात सतगुरुजी का नाम जपती थी। छह महीनों के पश्चात एक रात जब हिरुबाई सो रही थी तब सतगुरुजी ने उसे जगाया और कहा, "हिरुबाई, अब जल्दी से उठकर चली आओ।" सतगुरुजी के ये शब्द सुनते ही हिरुबाई ने देखा

तो, चेहरे पर दिव्य प्रभा होने वाले सतगुरु महाराजजी उसके समीप ही खड़े थे। उनके समीप एक जडाऊँ और दैदीप्यमान् विमान होकर सतगुरुजी के समान रूप होने वाले दो पुरुष उस विमान में थे। हिरु का हाथ पकड़कर सतगुरुजी ने उसे विमान में बिठाया। उस समय उसे हुआ आनंद वेदशास्त्र भी बयान नहीं कर पाएँगे। उस आनंद में लीन होने के कारण, उसे उसका पुत्र तथा नाती पोतों का भी पूर्ण रूप से विस्मरण हुआ, इतना ही नहीं, उसे उसके मनुष्य जन्म का भी स्मरण नहीं रहा, ऐसे अवर्णनीय आनंद में उस का मन तल्लीन हुआ था। वास्तव में उसका पुत्र विरुपाक्ष उसके बिछाने के बिलकुल पास ही बैठा था, परंतु उसे इसमें से कुछ भी दिखाई नहीं पड़ रहा था, केवल एक क्षण उसने हिरुबाई की जगह दिव्य प्रभा देखी। हिरुबाई ने "सिद्धारूढ़जी" ऐसा सतगुरुजी का नामोच्चारण करने के पश्चात जिस क्षण उसके प्राण गए, उस समय विरुपाक्ष ने दिव्य प्रभा देखी। उस समय घर के सभी सदस्य वहाँ इकट्ठा हो गए और उन्होंने भजन किया; उसके पश्चात बाजेगाजे के साथ बड़े वैभव से हिरुबाई की अंत्येष्टि की गयी। ऐसे हैं यह सतगुरु महाराजजी, जिन्होंने काल पर जय प्राप्त करके, केवल श्रद्धा तथा भक्ति से नामस्मरण करने वाले अपने भक्त को स्वयं का अमोघ स्थान दिया।

अब इस कथा का लक्ष्यार्थ सुनिए। हिरुबाई को मोक्ष प्राप्ति की तड़प होने वाला जीवात्मा समझें। वह पुराण कथा में कथन किया हुआ बोध सुनने हेतु जाते समय उसका प्रारब्ध उसके आड़े आया। जीवात्मा का वैराग्य रूपी पाँव मोह रूपी पत्थर से ठोकर खाने के कारण, जीवात्मा के अभिमान रूपी घर के बाहर जाकर पुराण कथा सुनने पर प्रतिबंध लग गया; परंतु जीवात्मा का विवेक जैसा था वैसा ही रहा। उस विवेक के बल पर मन का स्वयं के स्वरूपाकार वृत्ति रूपी नामस्मरण चलते रहने के समय, क्रोध तथा लोभ ये दो दुष्ट यमदूत जीवात्मा को नरक ले जाने के लिए आए। परंतु, जीवात्मा ने स्वयं की स्वरूपाकार वृत्ति धारण करने के कारण वे दोनों जीवात्मा के समीप न आकर भाग गए। जीवात्मा को आत्मरूप के साथ एकरूप होने के लिए षट् संपत्ति रूपी (शम, दम, उपरति, तितिक्षा, श्रद्धा तथा समाधान) छह महीने लगे; उसके उपरांत सतगुरुजी ने जीव-शिव की एकरूपता गढ़ाई। ऐसी एकरूपता की यह

कथा सुनने से हम स्वयं ही षड्रिपुओं पर पूर्ण रूप से विजय प्राप्त करके सतगुरु कृपा से जीवशिव की एकरूपता प्राप्त करते हैं। अस्तु। जिसका श्रवण करने से सभी पाप भस्म हो जाते हैं, ऐसे इस श्री सिद्धारूढ़ कथामृत का मधुर सा यह इकतालीसवाँ अध्याय श्री शिवदास श्री सिद्धारूढ़ स्वामीजी के चरणों में अर्पण करते हैं। सबका कल्याण हो।

॥ श्री गुरुसिद्धारूढ़चरणारविंदार्पणमस्तु ॥